classmate
Date 29/05/20
Page 1

लॉक का सरल तथा जटिल प्रत्यय (दुसरा भाग)

Simple and Complex Ideas of Locke (Second Part)

⟹ पिछले भाग में हमलोगों ने सरल प्रत्यय पर चर्चा किया था। इस भाग में हमलोग जटिल प्रत्यय पर विस्तार से चर्चा करेंगें।

जटिल प्रत्यय संवेदना और स्वसंवेदना के माध्यम से मन निष्क्रिय रूप में सरल प्रत्यय को ग्रहण करता है जिसे प्रत्यक्षीकरण (Perception) कहा जाता है। इसके बाद इस सरल प्रत्ययों को मन में ध्यान करना पड़ता है जिसे ध्यान करना कहते हैं। यदि प्राप्त प्रत्ययों को मन में ध्यान नहीं किया जाय अर्थात भुला दिया जाय तो फिर मिश्रित प्रत्ययों का निर्माण किन सामग्रियों से होगा? ध्यान करने के बाद मन की तीसरी क्रिया पृथकीकरण (discernment) कही जाती है। जब तक मन प्रत्ययों को एक दुसरे से पृथक नहीं कर लेता उनका मिश्रण सम्भव नहीं। क्योंकि मिश्रण का अर्थ ही है पृथकत्व को स्वीकारना। मन की चौथी क्रिया तुलना (comparison) कही

जाती है। इसलिये हम प्रत्ययों के बीच समता और असमता की तुलना करते है। इसके बाद मन सरल प्रत्ययों को समष्टि का रूप देता है जिसे मिश्रण क्रिया (Composition) कहते है। और अन्त में प्रत्ययों के इस मिश्रित रूप को एक नाम दिया जाता है अर्थात् नामकरण किया जाता है जिसे नामकरण या सामान्यकरण (naming or abstraction) कहा जाता है।

एक उदाहरण से मिश्रित प्रत्ययों की रचना में मन द्वारा सम्पन्न इन विभिन्न क्रियाओं को स्पष्ट कर सकते है। उदाहरण के लिए यदि हमारे समक्ष एक सेब हो तो सर्वप्रथम हम अपनी इन्द्रियों की सहायता से इसके रंग, गंध, स्वाद इत्यादि को सरल प्रत्यय के रूप में ग्रहण करते है, फिर इन्हें हम अपने मन में धारण करते है फिर इन विभिन्न प्रत्ययों को अपने मन में एक दूसरे से अलग या पृथक करते है जिसे पृथकीकरण कहा गया है।

इसके बाद उन प्रत्ययों की समता और असमता की तुलना करते है और इसके बाद सबों का मिश्रण करते है तथा अन्त में प्रत्ययों के उस समष्टि रूप को एक नाम देते है कि अमुक वस्तु सेब है।

इस उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि मिश्रित प्रत्ययों के निर्माण के पूर्व हमारा मन निष्क्रिय रूप से बाह्य वस्तुओं का सरल प्रत्यय ग्रहण करता है। क्योंकि बाद में उन्हें समाहित का रूप देने के लिए सक्रिय हो जाता है।

सरल और मिश्रित प्रत्ययों के स्वरूप तथा मिश्रित प्रत्ययों की रचना की व्याख्या कर लेने के बाद मिश्रित प्रत्ययों के विभिन्न रूपों का अध्ययन करना आवश्यक है। लॉक के अनुसार मानव मन इन्द्रियों से प्राप्त सरल प्रत्ययों की सहायता से तीन प्रकार के मिश्रित प्रत्ययों की रचना करता है जिन्हें उन्होंने विकार (modes), पदार्थ या द्रव्य (substance) तथा सम्बन्ध (relation) कहा है। अब इन पर विस्तृत चर्चा करना आवश्यक है।

(1) विकार (modes) → मिश्रित प्रत्यय का पहला रूप वह है जिसे लॉक ने विकार कहा है और जिसकी रचना विभिन्न प्रकार के सरल प्रत्ययों के सम्मिश्रण से होती है। जैसे गुलाब या सेब मिश्रित प्रत्यय के उदाहरण है जिनमें अलग-अलग रूप से कई सरल प्रत्ययों का सम्मिश्रण है, जैसे लाली, सुगन्ध, चिकनापन, कोमलता इत्यादि। लॉक के अनुसार ये विकार भी दो प्रकार के होते है - सरल विकार और मिश्रित विकार। सरल विकार से अर्थ उस विकार से

है जिसमें एक ही प्रकार के कई सरल प्रत्ययों का मिश्रण हो. जैसे दर्जन एक विकार का उदाहरण है क्योंकि इसमें बारह का जो भाव है वह एक के बारह बारह सरल प्रत्ययों से बना है। लॉक के अनुसार सरल विकार एक ही प्रकार के प्रत्ययों के संयोग से बनता है जिसमें किसी अन्य प्रकार के प्रत्ययों का संयोग नहीं होता।

मिश्रित विकार उसे कहा जाता है जिसका निर्माण विविध प्रकार के सरल प्रत्ययों से होता है अर्थात वे सरल प्रत्यय जिनसे उनका निर्माण होता है उनमें गुणात्मक भेद होता है। उदाहरण के लिए सौन्दर्य एक मिश्रित विकार है जिसमें कई प्रकार के सरल प्रत्ययों का संयोग है जैसे रंग, आकार, आकर्षण इत्यादि। Thilly ने इस सम्बन्ध में कहा है कि मिश्रित विकारों की रचना विविध गुण वाले सरल प्रत्ययों से होती है जैसे रंग, आकार एवं देखने वाले व्यक्ति का विषय के प्रति आकर्षण। इसी प्रकार कपट, मित्रता, कर्तव्य इत्यादि मिश्रित विकार के उदाहरण है क्योंकि प्रत्येक में विविध प्रकार के अनेक सरल प्रत्ययों का संयोग है। लॉक के अनुसार मिश्रित विकारों की प्राप्ति अनुभव, अनुसंधान तथा मन के व्यक्तिगत भाव से होता है।

(2) पदार्थ या द्रव्य — लॉक के द्रव्य सम्बन्धी विचार पर दृष्टिपात करने से यह प्रतीत होता है कि वे स्वयं अपने विचारों में अन्तर्व्याप्त (Confused) है। हमलोग देखते हैं कि जब लॉक द्रव्य की तार्किक व्याख्या करते हैं तो वे इसे अज्ञेय घोषित करते हैं क्योंकि उनके अनुसार हमारी अनुभूतियाँ मात्र प्रत्ययों तक ही सीमित है, हमें केवल प्रत्ययों का ही बोध है वस्तु के यथार्थ स्वरूप का बोध नहीं होता। पर चूँकि लॉक अणु को सत्य मानते हैं इसलिए वे द्रव्य को नित्य और अपरिवर्तनशील मानते हैं और बताते हैं कि यह गुणों और कर्मों का आधार है। लॉक के इस विचार से यह व्यक्त होता है कि वे द्रव्य को आंशिक रूप में ज्ञेय और आंशिक रूप में अज्ञेय मानते हैं। अतः द्रव्य की सत्ता सत्य है पर हम उसे जान नहीं सकते। लॉक ने इस प्रकार के द्रव्यों की संख्या तीन मानी है - जड़ पदार्थ, मनस् या आत्मा और ईश्वर। अब तीनों प्रकार के पदार्थ पर अलग-अलग विचार करना अपेक्षित होगा।

(क) जड़ पदार्थ — लॉक ने जड़ पदार्थ की व्याख्या अपने प्रतिनिधित्व सिद्धान्त के आधार पर की है। उनके अनुसार संवेदनायें गुणों का बोध कराती हैं जिन्हें वे दो प्रकार का मानते हैं - प्राथमिक गुण एवं गौण गुण। लॉक ने कहा है कि प्राथमिक गुण से अर्थ उन गुणों से है जिनका आधार

या आधिष्ठान जड़ पदार्थ है तथा जिन्हें न तो पदार्थ से अलग किया जा सकता है और न जिनका विनाश सम्भव है। प्राथमिक गुणों की मौलिक विशेषता यह है कि वे शाश्वत होते है तथा उनका अस्तित्व ज्ञाता पर आश्रित नहीं होता। वस्तुओं का आकार, गति, स्थिरता विस्तार, संख्या और ठोसपन ये छः ऐसे गुण है जिन्हें लॉक ने प्राथमिक गुण कहा है क्योंकि इन गुणों का अस्तित्व किसी ज्ञाता पर निर्भर नहीं होता।

दुसरी ओर गौण गुण से अर्थ वैसे गुणों से समझा जाता है जिनका बोध या ज्ञान वस्तुओं एवं इन्द्रियों के सम्पर्क से होता है। दुसरे शब्दों में गौण गुण ज्ञाता पर आश्रित होते है जैसे गुलाब का रंग, सुगन्ध, चिकनापन आदि। लॉक के अनुसार गुलाब के ये गुण जिनकी अनुभूति इन्द्रियों से होती है ज्ञाता पर निर्भर करते है। इस प्रकार लॉक के अनुसार जड़ पदार्थ एक मिश्रित प्रत्यय है जिसमें विभिन्न प्रकार के कई सरल प्रत्ययों का समयोग होता है।

शेष अगले भाग में

Dr. Md. Arshad Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College
V.K.S.U, Ara.